पुरंदर की चतुर संधी

नरवीर मुरारबाजी देशपांडे का भव्य स्मारक - पुरंदर किला

भाग २

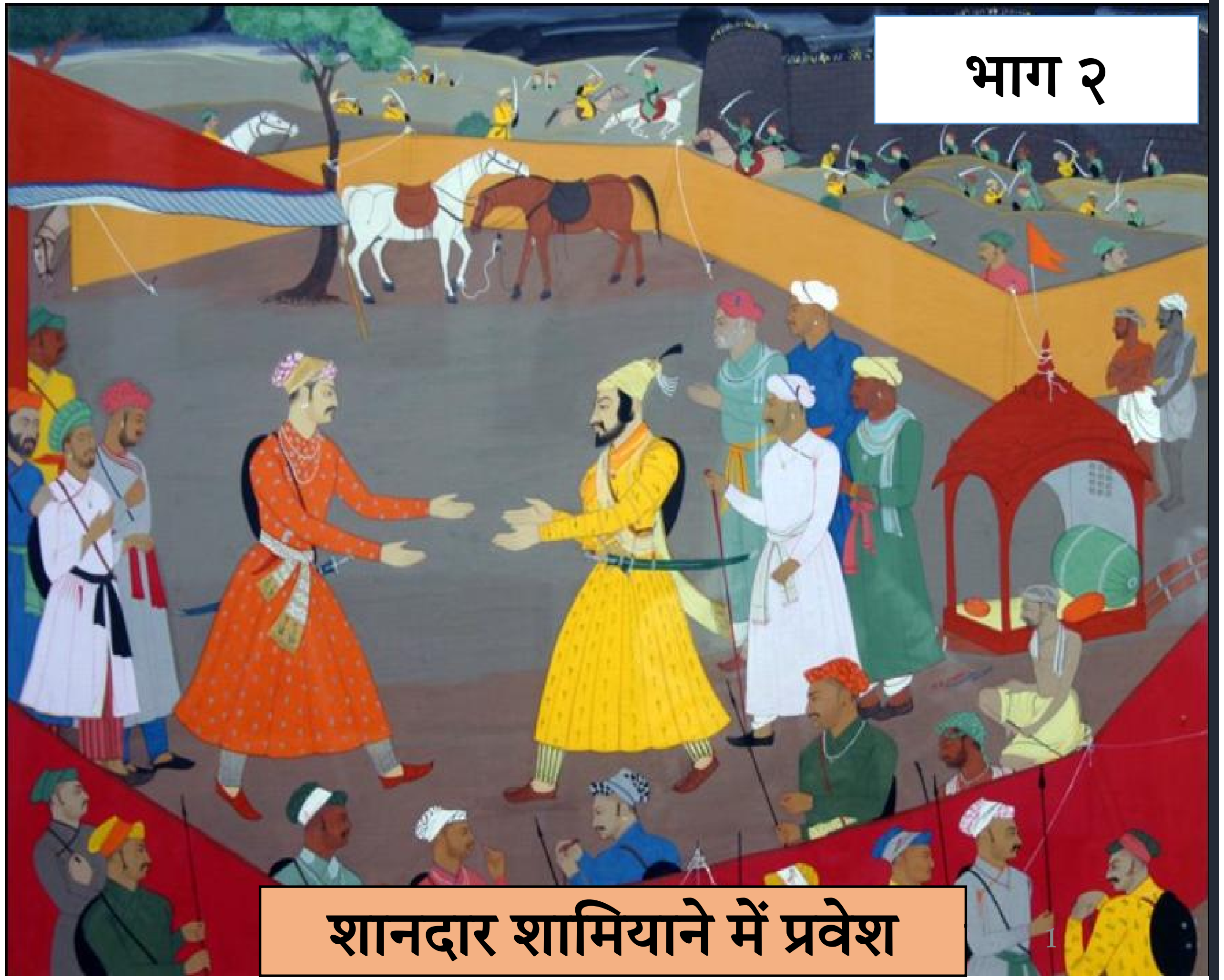

शानदार शामियाने में प्रवेश

पुरंदर वार्तालाप का दर्शन

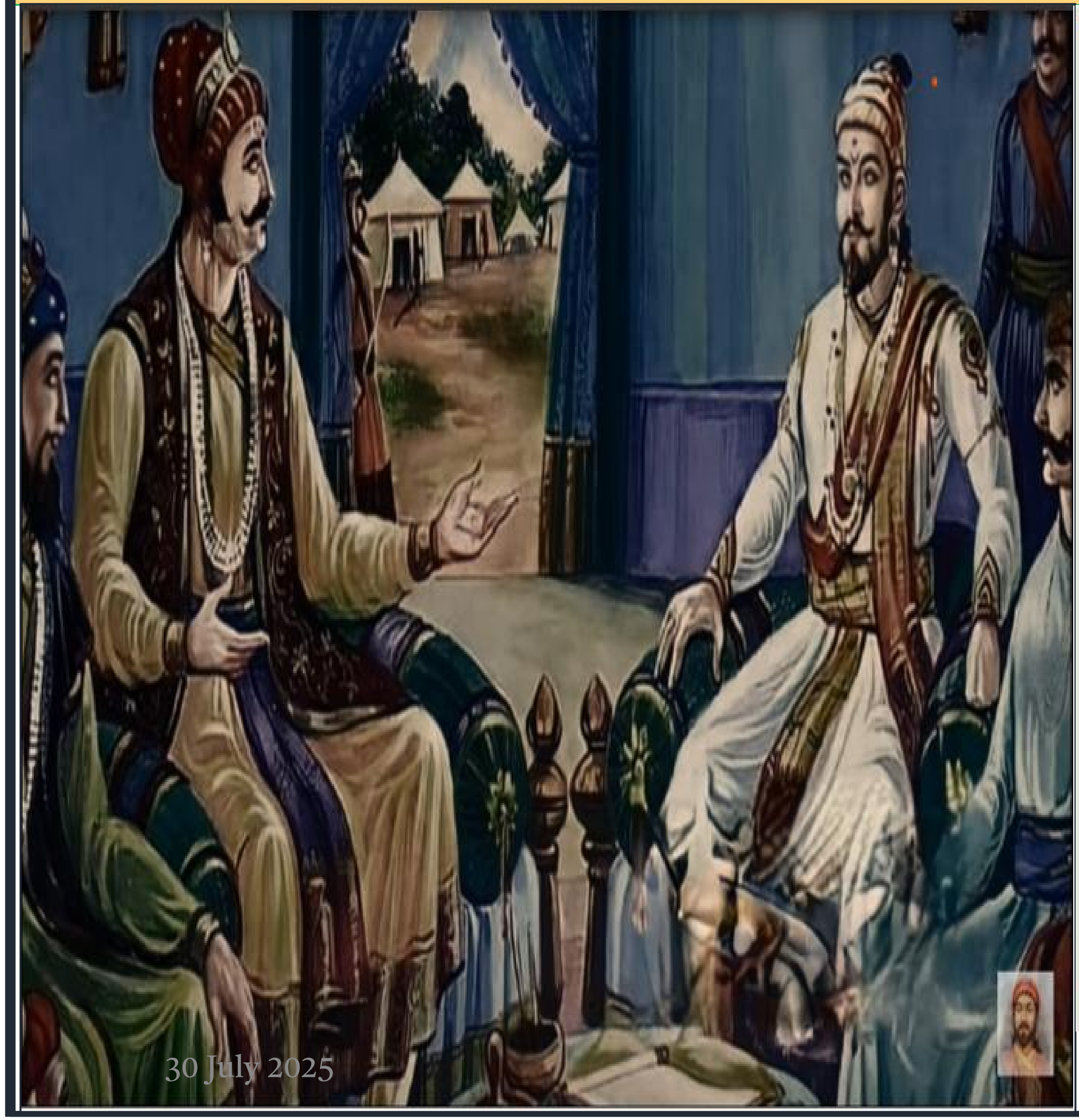

शानदार शामियाने में धूर्त संधी

राजगढ़ से पुरंदर के पास चिव्हेवाड़ी तक शिवाजी महाराज का सैन्यबल के साथ शामियाना तक आने का मार्ग

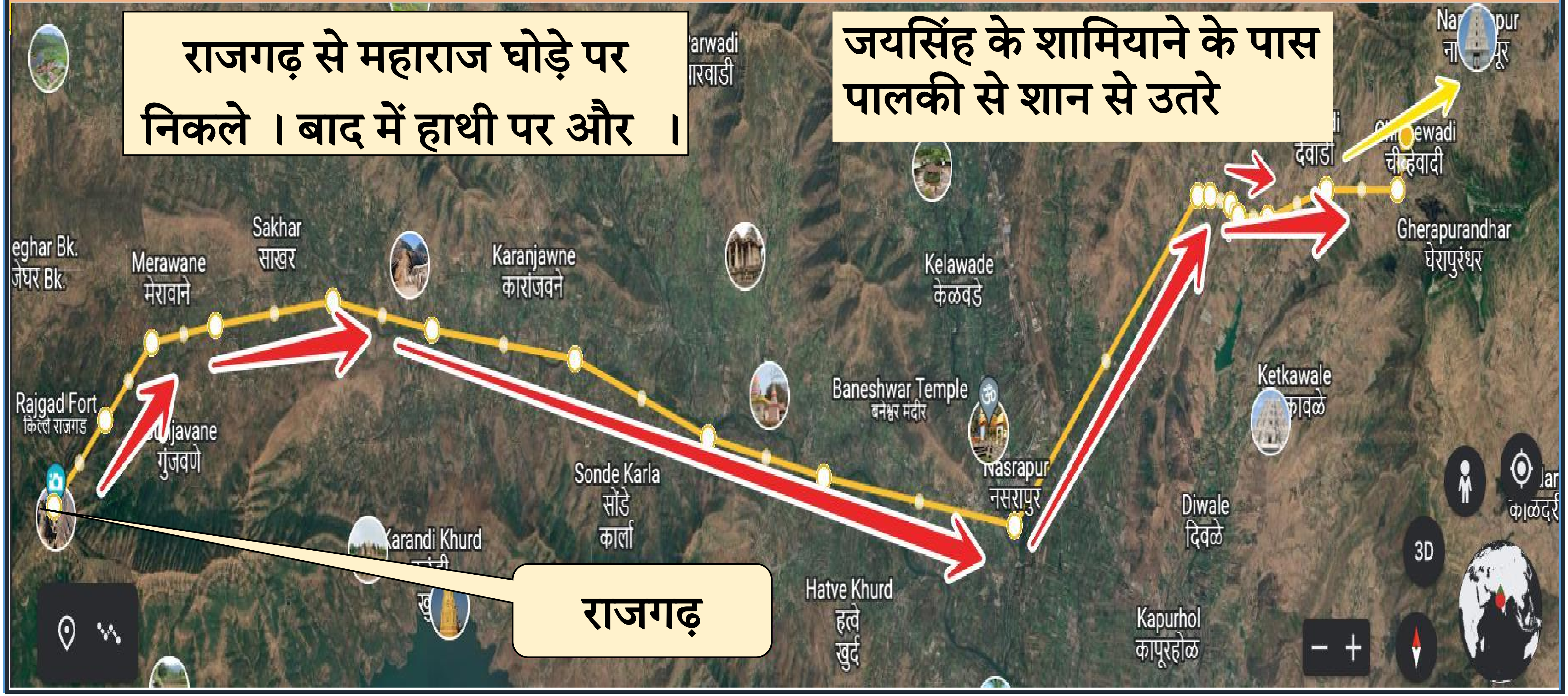

शानदार शामियाने मैं प्रवेश

पुरंदर का समझौता या पीछेहट ?

भाग २

राजनीति मैं श्रेय प्राप्त करने का तरीका

पुरंदर वार्तालाप का दर्शन

लड़ाई के मैदान में

- शौर्य और धैर्य से अर्जित श्रेय
- संधि की भनक लगते ही दिलेर खान क्रोधित हो उठा ।'तुम एक महान वीर योद्धा हो ।तुम्हारा यह अद्भुत पराक्रम देखकर मैं चकित हूँ ।
- इस समय निमंत्रण स्वीकार कर मेरे अधीन हो जाओ ।मैं तुम्हें उच्च पद पर आसीन करूँगा...' दिलेर खान की लालच को मुरारबाजी ने ठुकरा दिया ।

दीवानखाने में बातचीत में

- समझौते और भय दिखाकर अर्जित श्रेय
- महाराज के वकील के माध्यम से बातचीत के प्रस्ताव ।
- संधि की संभावना तलाशने के लिए पत्राचार शुरू हो गया ।
- मिर्ज़ा राजे का विचार था कि पुरंदर किले पर और कितना समय तक टक्कर मारेंगे? इसकी बजाय सामंजस्य से संधि करना बेहतर है ।

पुरंदर संधि के संदर्भ में घटना चक्र

दिनांक और स्थान	मुगलों की ओर से घटनाएँ
६ जून १६६५	रघुनाथ पंत को मिर्ज़ाराजे ने बेल-तुलसी देकर अभयदान दिया
१० जून १६६५	महाराज मिर्ज़ा के दरबार में उपस्थित हुए ।
११ जून १६६५	संधि की शर्तें रात तक तय होती रहीं ।किलों का स्वामित्व तुरंत सौंपना शुरू हुआ ।
१२ जून १६६५	रोहिडगढ़ पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा गया ।
१३ जून १६६५ १३ जून १६६५ दुपारी	दोपहर में दिलेर खान संधि वार्ता से बाहर रखे जाने से नाराज़ था । महाराजा द्वारा पुरंदर किले को बिना लड़ाई के मिलने पर खान ने बाद में उनका सत्कार किया ।
१४ जून १६६५	संधि की बातचीत जारी ।औरंगज़ेब की मंजूरी के लिए संधि का मसौदा रवाना हुआ ।

दिनांक और स्थान	मराठों की ओर से घटनाएँ
६ जून १६६५	महाराजा ने राजगढ़ छोड़ा ।नसरापुर के इलाके में आकर रुके ।
१० जून १६६५	पहले हाथी पर और फिर महाराज पालकी में बैठकर मिर्ज़ाराजे से मिलने शामियाना में पहुँचे ।
११ जून १६६५	वर्तमान संकट में संधि की शर्तों के जटिल मसौदे के माध्यम से अपने अस्तित्व को बनाए रखना आवश्यक था, इसलिए महाराजा ने नरमी का रुख अपनाया ।
१२ जून १६६५	पुर्तगालियों और अंग्रेजों के साथ नरमी का रुख तय कर महाराजाओं की ओर से संदेश भेजे जा रहे थे ।
१३ जून १६६५	दिलेर खान को, 'यह लो किले की चाबियाँ ।मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से देने आया हूँ' कहकर चकित किया ।
१४ जून १६६५	सिंहगढ़ कीरत सिंह के हाथ चला गया ।जीजाबाई सहित सभी ने किला छोड़ दिया

संधि की बातचीत के लिए रखे गए प्रस्ताव

मिर्ज़ा राजे द्वारा रखे गए प्रस्ताव	शिवाजी महाराज द्वारा रखा गया प्रस्ताव
❖१. सभी ३५ किले मुगलों को दिए जाएँ । ❖२. २३ किलों का ४ लाख हून राजस्व मुगलों को दिया जाए । ❖इसके बाद मुग़ल क्षेत्रों को लूटा न जाए । ❖३. मुगलों की सैन्य कार्रवाई में पूरी तरह भाग लेने की गारंटी दी जाए । ❖४. पंचहज़ारी मनसब बादशाह के आदेश के बाद कुंवर संभाजी को दी जाएगी ।नेताजी पालकर उनकी ओर से मुग़ल दरबार में सेवा करेंगे ।	❖१. निज़ामशाही के अंत के बाद हमने जो ३५ किले जीते हैं, वे बिना शर्त देंगे । ❖२. १२ किलों का १ लाख हून राजस्व शाही कृपा के प्रतीक के रूप में हमारे पास रहने दिया जाए । ❖३. अदूरदर्शी व्यवहार के प्रायश्चित के रूप में मुझे बादशाही नौकरी नहीं चाहिए ।इसके बजाय पुत्र संभाजी राजे को मनसबदारी दी जाए । ❖४. इसके बदले बीजापुर के निचले कोंकण तट का राजस्व मराठों को मिलना चाहिए ।

प्रस्तावों का शर्तों में रूपांतरण

मिर्ज़ा राजे द्वारा रखे गए प्रस्ताव	शिवाजी महाराज द्वारा रखा गया प्रस्ताव
१. सभी ३५ किले दिए जाएँ ।	१. निज़ामशाही में हमने जीते या नए बनवाए गए किलों में से मुगलों के २३ किले बिना शर्त देते हैं ।
२. २३ किलों का ४ लाख हून राजस्व मुगलों को दिया जाए । इसके बाद मुग़ल क्षेत्रों को लूटा न जाए ।	२. महाराजा को यह शर्त माननी पड़ी ।
३. मुगलों की सैन्य कार्रवाई में पूरी तरह भाग लेने की गारंटी दी जाए पंचहज़ारी मनसब बादशाह के आदेश के बाद कुंवर संभाजी को दी जाएगी ।नेताजी पालकर उनकी ओर से मुग़ल दरबार में सेवा करेंगे ।	३. इसके बाद बादशाह से बेवफाई नहीं करूँगा ।दक्षिण में मुझे जो भी काम सौंपा जाएगा, वह करूँगा ।मुझे बादशाह की मनसबदारी नहीं चाहिए ।अपने पुत्र संभाजी राजे को सेवा के लिए भेज देता हूँ ।
४. शिवाजी मुगलों की नौकरी स्वीकार करें । बीजापुर वालों के पास बचे हुए १२ किलों की मिल्कियत के बारे में विश्वास दिलाने के लिए आप क्या करेंगे?	४. निचले कोंकण पट्टी में बीजापुर के बाकी बचे इलाके को मैं जीत लूँगा ।आप मुझे वैसी अनुमति दें ।
५. अनुमति दी तो इसके बदले मुगलों को क्या मिलेगा? (शर्तें रखने वाला अब शर्तें मानने की मानसिकता में है) ।	५. प्रतिवर्ष ३ लाख की किश्त में अगले १३ वर्षों में ४० लाख हून दूँगा ।(बीजापुर का इलाका, अनुमति मुग़ल बादशाह की, कब्ज़ा शिवाजी महाराज का!) ।

शपथ की मनसब लेने दिल्ली दरबार जाने की शर्त

मिर्ज़ा राजा की रखी गई शर्तें	शिवाजी महाराज द्वारा स्वीकार की गई शर्तें
६. संभाजी राजे को पंचहज़ारी मनसब देना मिर्ज़ा राजे ने बादशाह की सहमति के बाद स्वीकार किया ।	६. पाँच हज़ार सेना का वेतन बादशाह के खजाने से मिला ।ज़रूरत पड़ने पर मुगलों की तरफ से लड़ेंगे ।संभाजी राजे बालक होने के कारण उनकी ओर से यह कार्य हमारे प्रतिनिधि करेंगे ।
७. संधि वार्ता शिवाजी के साथ चल रही है सुनकर दिलेर खान भड़क गया ।'यहाँ मैं अपने सैनिकों को मरवाकर पुरंदर को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूँ और मुझे बताए बिना आप शिवाजी से बात कर रहे हैं, यह मुझे स्वीकार्य नहीं है' ।	७. मिर्ज़ा राजे को इसकी जानकारी होनी चाहिए ।उन्होंने महाराजा को दिलेर खान से प्रत्यक्ष मिलने का सुझाव दिया ।महाराजा को अपने जीवन का भय न हो, इसके लिए अपने निकटवर्तियों को साथ दिया ।महाराजा को शर्त माननी पड़ी ।
८. औरंगज़ेब से शर्तों के स्वीकृति पत्र आने का इंतज़ार किए बिना शिवाजी तय किए गए किले मुगलों द्वारा नियुक्त किलेदारों को सौंपना शुरू करें ।	८. इस शर्त का पालन पुरंदर किले से शुरू हुआ ।सिंहगढ़ पर महाराज साथ जाकर जीजामाता और अन्य सरदारों ने वह किला छोड़कर मुगलों के किलेदार को दे दिया ।
९. सभी 23 किले मिले और शिवाजी ने 3 लाख की पहली किश्त भरी, यह सुनिश्चित कर मिर्ज़ा राजे ने औरंगज़ेब को समझौते के पालन की रिपोर्ट प्रस्तुत की ।	९. पुरंदर, सिंहगढ़, लोहगढ़, माहुली किले को छोड़कर शेष आकार में छोटे, जीतने में आसान और सैन्य दृष्टि से कम महत्वपूर्ण थे ।कुछ किलों के नाम में भ्रम है ।23 के बजाय वे कुल 20 ही बैठते हैं ।उदाहरण के लिए, पुरंदर और वज्रगढ़ को अलग-अलग माना गया

शिवाजी महाराज की दिलेर खान को संभालने की कुशलता!

- जिद पर अड़ा दिलेर खान आवेश में बोला,
- "मैं पुरंदर किले पर कब्जा कर अंदर के एक-एक व्यक्ति का नरसंहार करने तक संधि की बात स्वीकार नहीं करूँगा...!"
- महाराज ने कहा, "पुरंदर किला आपका ही है । उसकी चाबियाँ आपको देने के लिए लाया हूँ । यह लीजिए..."
- महाराज ने आगे कहा, "आप जैसे वीर सरदार से लड़ने का साहस करना शुद्ध मूर्खता है । मेरे अब तक के व्यवहार को ध्यान में न रखते हुए, यदि आप बादशाह के पास मेरी सिफारिश कर दें कि वह मुझे अपनी नौकरी में रखे, तो मेरा उद्धार हो जाएगा" ।
- यह कहकर चाबियाँ देते हुए महाराजा ने खान का भव्य सत्कार किया।

संधि की शर्तों का चतुर निहित उद्देश्य

मिर्ज़ा राजे की ओर से	शिवाजी महाराज की ओर से
१. पुरंदर किले को जीतने में दिलेर खान जैसे अनुभवी व्यक्ति को ३ महीने लगे, फिर भी पूरी तरह हासिल नहीं हो सका । तो अन्य पहाड़ी किलों को हासिल करना, समय और खर्च को देखते हुए अभियान चलाना संभव नहीं है ।	१. स्वराज्य पर आए संकट को युद्ध किए बिना मुगलों को बीजापुरियों से दुश्मनी में बदलकर टालना ।
२. बादशाह से स्वीकृति का आदेश आने तक शिवाजी को बारिश के महीनों में अपने शिविर में रोके रखा जा सकता है ।	२. कोंकण तट पर राजस्व का अधिकार प्राप्त करना और बाद में बीजापुरियों से हाथ मिलाकर मुगलों से किले वापस हासिल करना ।
३. कुतुबशाही और बीजापुरशाही को मुगलों के अधीन लाने के लिए शिवाजी को मनसबदारी का प्रलोभन देकर उपयोग करने की सुविधा तैयार हो ।	३. १६६४ में सूरत की लूट के लिए क्षतिपूर्ति से बचना ।
४. मुगल दरबार में उच्च पद प्राप्त करने का अवसर।	४. औरंगज़ेब को अपने खिलाफ सैन्य अभियान चलाने का अवसर न मिले ।

संधि की शर्तों में छिपे खतरे

शिवाजी महाराजाओं के सामने खतरे	शिवाजी महाराज द्वारा निकाला गया समाधान
१. संधि की शर्तों को स्वीकार करने वाला फरमान आने तक महाराजाओं को मुगलों के शिविर में फँसे रहना पड़ता ।	१. शपथ पर बुलाया है तो धोखा देकर कैद करना उचित नहीं । मुझे ज़्यादा दिनों तक अपने शिविर में रखा तो मुगलों को आप पर मिलीभगत का संदेह होगा ।
२. रंदर की और अधिक बर्बादी रोकनी चाहिए । ३. यदि औरंगज़ेब द्वारा 1664 में सूरत की लूट की क्षतिपूर्ति की शर्त लगाई जाती तो पैसों की दिक्कत हो जाती ।	२.पुरंदर किले पर फँसी निर्दोष महिलाओं और बच्चों को तुरंत छुड़ाया गया । ३. क्षतिपूर्ति का विषय न उठाकर भारी नजराने और मुगलों की आवभगत करके उस विषय को टाला गया ।
४. यदि बीजापुर की आदिलशाही पर कोंकण तट पर बंदरगाह-किलों पर हमला होता तो वह आय भी डूब जाती ।	४. बीजापुरियों से समझौता किया कि यदि मुगलों द्वारा आदिल शाही पर हमला होता है तो मैं अपनी ओर से लड़ूंगा ।
५. इतने वर्षों की मेहनत व्यर्थ हो जाती ।	५. अभी संधि करके खोए हुए किले और प्रदेश फिर से प्राप्त किए जा सकते हैं ।

जीतने आए लोगों ने महाराजाओं से दावत उड़ाई!

महाराज की थाली में आमरस पूरी

सरदारों की थाली में नवरत्न कोरमा पूरी

❖ शिवाजी महाराज का हाथ हाथ में लेकर मिर्ज़ा राजे के हाथ में देते हुए दिलेर खान बोला, 'मिर्ज़ा राजे जो कुछ भी करेंगे वह हमें स्वीकार्य है । पुरंदर किले का घेरा उठा लिया, ऐसा समझो'

❖ उस दिन शिवाजी महाराज ने मिर्ज़ा राजे, दिलेर खान और अन्य बड़े सरदारों को शानदार दावत दी!

मिर्ज़ा राजे की थाली में दाल-बाटी।

दिलेर खान की थाली में मुर्गी ।

पुरंदर की संधि के बाद का घटना चक्र 1

दिनांक व स्थळ - घटना	शिवाजी महाराज की ओर से घटनाएं
१. जुलै - ऑगस्ट १६६५ विजापुरकरांच्या खवासखानाचा मुलगा इखलास खानाने तळकोकणातील महत्वाची ठाणी परत मिळवायला हल्ले केले.	१. भरी बारिश में राजापुर, दाभोल, वेंगुर्ले, कुडाल आदि महत्वपूर्ण ठिकाने गँवाने पड़े ।
२. २७ सितंबर १६६५: औरंगज़ेब से पंजा छाप वाला फरमान आया ।इस दौरान शिवाजी को आपने वापस क्यों जाने दिया? बीजापुर के सूबे के लिए आपको क्यों छूट देनी चाहिए, आदि समझौते में दोष बताए गए ।	२. पत्रवाहक गुर्ज़बर्दारा से शाही फरमान घुटने टेक कर स्वीकार करने के लिए महाराज कीरत सिंह ६ किमी दूर गए ।वापस लौटते समय सिर पर रखकर मिर्ज़ा राजे के शिविर में लौटे ।
३. ५ जनवरी १६६६: बीजापुर पर हमला ।मुगलों की हार ।शिवाजी पर दोष ।	३. पन्हाला किला मैं लेता हूँ कहकर मुग़ल सेना से अलग रहने की चाल सफल रही ।
४. नेताजी अपनी सेना लेकर बीजापुर वालों से मिल गए ।पठान दिलेर खान और राजपूतों के बीच आंतरिक कलह बढ़ गया ।मिर्ज़ा राजे की प्रतिष्ठा गिरी ।शिवाजी एक अच्छे योद्धा हैं ।उन्हें बाद में दक्षिण का सूबेदार बनाया जा सकता है, आदि कहा गया ।	४. सेना सहित नेताजी का दल बदलकर बीजापुर वालों से मिलना, इसके पीछे महाराजा का कोई अलग कारण होना चाहिए ।क्योंकि बाद में ५ मार्च को वे फिर से मुगलों से मिल गए ।कालांतर में धर्मांतरण और उनकी बेटी से अपना दामाद बनाया ।

पुरंदर की संधि के बाद का घटना चक्र २

मुगलों की ओर से घटनाएँ	शिवाजी महाराज की ओर से घटनाएं
१. संभाजी राजे को सही मुहर वाला हुक्म और पंचहज़ारी मनसब देना मिर्ज़ा राजे ने बादशाह की सहमति के बाद स्वीकार किया ।	१. ५ मार्च १६६६ रोजी महाराज राजगडावरून आग्र्यास प्रयाण.११ मे १६६६रोजी आग्र्याच्या मुलुक चंद सराईत आले.
२. ५ जानेवारी १६६६ शहाजहानचे आग्र्याच्या लाल किल्ल्यात निधन झाले. म्हणून औरंगजेबाचे आगऱ्यात आगमन झाले.	२. जनवरी / फरवरी १६६६: नेताजी की जगह प्रतापराव गुर्जर को सरनौबत के रूप में नियुक्त किया गया ।
शिवाजी महाराज आगरा से छुटकारा पाने के बाद	
३. अक्टूबर १६६६ में, उन्होंने औरंगजेब के दरबार को एक पत्र भेजकर अपनी मुलाकात न होने पर खेद व्यक्त किया ।औरंगजेब ने पत्र के माध्यम से सूचित किया कि युवराज संभाजी को आपके आदेश से मिली मनसबदारी की शर्तों के अनुसार, हमारी ५ हजार सेना मुगल सेना की सेवा में रहेगी।	३. मैं कोंकण में वसई से मालवण तक के बंदरगाह, जलदुर्ग, अहमदनगर के निज़ाम से प्राप्त करता रहूंगा। दिसंबर १६६६ तक, मुगलों के खर्च पर ५ हजार सैनिकों और उनके जानवरों के रहने-खाने की व्यवस्था की गई। बाद में मुगलों ने शिवाजी की मान्यता तोड़ी। उसके बाद १६७० से १६८० तक की अवधी में अभियानों में मैदानीशिवाजी महाराज आगरा से छुटकारा पाने के बाद युद्ध -तकनीक बदलती गई।

क्या शिवाजी महाराज ने ताजमहल देखा होगा?

मई - जून १६६६: औरंगज़ेब का दरबार दिल्ली में न होकर आगरा के लालकिले में लगता था । उस समय शाहजहाँ की कब्र का निर्माण कार्य चल रहा था, इसलिए ताजमहल की इमारत का विषय ताज़ा था । मिर्ज़ा राजे - जयपुर की मिल्कियत वाली वह जगह होने के कारण रामसिंह से चर्चा में ताजमहल का विषय शिवाजी महाराज की जानकारी में होना चाहिए ।परंतु नज़रबंदी के कारण ताजमहल देखना संभव नहीं था ।

इस शोध कार्य की सीमाएँ

- ❖ यह शोध कार्य इस प्रमेय पर आधारित है कि युद्धशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यदि आजकल के सैन्य अधिकारियों को आदेश मिले, तो वे शोध की स्वतंत्रता लेकर, उस समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, इस तरह के अभियानों की योजना कैसे बनाएंगे और उन्हें कैसे अंजाम देंगे।
- ❖ भारतीय इतिहास में कई स्थानों पर ऐतिहासिक लड़ाइयों का विवरण विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में उपलब्ध नहीं है।ऐसे समय में, उन लड़ाइयों में शामिल व्यक्तियों के जीवन के व्यवहार, शौर्य, धैर्य, और शस्त्रों के ज्ञान को ध्यान में रखते हुए ये अभियान प्रस्तुत किए गए हैं।
- ❖ यह दावा नहीं है कि वास्तविक घटनाएँ ऐसी ही हुई थीं।यह दिखाने का प्रयास है कि युद्ध कैसे हुआ होगा।

धूर्त युद्ध तंत्र क्या है?
इस लड़ाई में वह कैसे उभर कर आता है?

स्टाफ कॉलेज के आर्मी विभाग के प्रमुख मेजर जनरल अमरदीप भारद्वाज इस पर अध्ययन कर कहेंगे...

- मैन्यूवर वॉरफेयर (Manoeuvre Warfare) या मराठी में संक्षिप्त नाम 'धूर्त युद्ध तंत्र' ।यह विभिन्न घटकों से सिद्ध होता है ।
- उन्होंने दुनिया के प्रसिद्ध सैन्य कमांडरों की लड़ाइयों का आकलन कर शिवाजी महाराज को (१० में से १० अंक देने की प्रथा नहीं है इसलिए) १० में से ६ अंक देकर प्रथम स्थान से सम्मानित किया है ।
- इस लड़ाई में उनके विचार से - धक्के का तत्व, भ्रम पैदा करना, चकमा देना, छिपकर बड़ा हमला करके लड़ाई जीतना - इन चारों तकनीकों का उपयोग किया गया है ।
- इसके अलावा, दीवानखाने में बातचीत में नरमी और शर्तों की शब्द रचना में चतुराई दिखती है ।

विंग कमांडर शशिकांत ओक: एक बहु आयामी व्यक्तिमत्व

नमस्ते दोस्तों! आज मैं आपको एक ऐसे शख्स से मिलवाने जा रहा हूँ, जिनका काम कई क्षेत्रों में फैला हुआ है और जिनके विचारों से कई लोग प्रभावित हुए हैं।मेरे दोस्त, विंग कमांडर शशिकांत ओक का परिचय तो पुराना ही है।

- वायुसेना का करियर और नाडी ग्रंथ भविष्य
- वायुसेना में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने नाडी ग्रंथ भविष्य जैसे रहस्यमयी विषय पर विस्तार से लिखा।अगस्त्य, कौशिक, वसिष्ठ, भृगु जैसे जाने-माने महर्षियों के अलावा, पुल्लीपाणि, कमल, काग पुजंदर जैसे कुछ अजीब नामों के महर्षियों ने भी ताड़पत्रों पर खोदकर आज के समय के लोगों का भविष्य बताया है।क्या इन ताड़पत्रों पर सच में हमारा नाम, जन्मदिन, शिक्षा, नौकरी-व्यवसाय जैसी जानकारी खुदी होती है? इस पर उन्होंने गहराई से रिसर्च की।उन्होंने इंडोलॉजिकल संस्थानों से इन नामों की पुष्टि भी करवाई, जो उनकी खोजी प्रवृत्ति को दर्शाता है।

- रिटायरमेंट के बाद का सामाजिक कार्य
- रिटायरमेंट के बाद भी, उनका सामाजिक सरोकार बना रहा।कई सीनियर मिलिट्री कमांडरों के साथ मिलकर उन्होंने सोचा कि हम समाज के लिए क्या कर सकते हैं।इसी सोच से उन्होंने एक अनोखा काम शुरू किया।शिवाजी महाराज की लड़ाइयों को अगर आज के मिलिट्री कमांडरों को प्लान करके पूरा करने का काम दिया जाए, तो वे इसे कैसे करेंगे, इस विषय पर आधारित पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन उन्होंने तैयार किए हैं।यह पहल उनके ऐतिहासिक और सैन्य ज्ञान की गहराई को दिखाती है।

- विपुल लेखन और विभिन्न पहलू
- इसके अलावा, विंग कमांडर ओक ने कई विषयों पर ढेर सारा लेखन किया है।उनका भाषा ज्ञान और पोथी साहित्य का रसग्रहणात्मक लेखन उनकी विद्वत्ता का प्रमाण है।खास बात यह है कि वायुसेना में अपने कार्यकाल के दौरान हुई मज़ेदार घटनाओं में अपनी खुद की फजीहत और मज़ाक को भी वे बड़े ही मज़ेदार ढंग से बताते हैं, जो उनके खुले विचारों वाले और मजाकिया व्यक्तित्व को उजागर करता है।

- वर्तमान और भविष्य का काम
- वर्तमान स्थिति पर उनकी राय हमेशा सोचने पर मजबूर करती है।एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति के रूप में मैं उनका प्रशंसक हूँ।फिलहाल, वे समर्थ रामदास स्वामी के मनोपदेश पर १० भागों में काम कर रहे हैं, जो उनकी आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना का प्रतीक है।

❖ विंग कमांडर शशिकांत ओक जैसे अनुभवी और बहुआयामी व्यक्तित्व को आपके सामने पेश करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।मो.क्र. : 9881901049

लाल महल पर शिवाजी महाराज का सर्जिकल स्ट्राइक
लाल
महाल

INDIAN ARMY
भारतीय सेना
भारतीय
वायु सेना
नभः स्पृशं दीप्तम्
सत्यमेव जयते
शं नो वरुणः
INDIAN NAVY
वर्तमान थलसेना, वायु सेना और नौसेना के
तज्ज्ञ अधिकारियों की प्रस्तुती

उंबरखिंड का घटना चक्र
करतलबखान की फजीहत –
अम्बेनळी में समर्पण – भाग 2
मुगल सैन्य भीषण कुरवंडे घाटी में घिर गये?
650 m
500 m
360 m
230 m
160 m
130 m
90 m
प्रसिद्ध
ड्युक्स
नोज
की
बाकदा

उंबरखिंड में करारी हार
करतलबखानाची अंबे नळीतील शरणागती – भाग 2.

भारतीय सेना
INDIAN NAVY
भाग १
महाराणा प्रताप राजस्तान में सबसे अधिक पूजनीय है। आप बहादुर देशभक्त तथा उदार हिंदू क्षत्रिय थे।
₹ 50
हल्दी घाटी को समर्पित रण
© विंग कमांडर शशिकांत ओक
मो. ९८८१९०१०४९ संस्करण - जून २०२१ . मूल्य ₹ ५०
कृपया ध्यान दें: ब्रिटिश उच्चारण के प्रभाव को कम करने के लिए भारतीय शैली के अनुसार नाम लिखे गए हैं।

दख्खन का डींगमार सुभेदार बहादुरखां कोकलताश
फिल्म 'शोले' के अंगरेज जेलर की याद ताजा हो जाती है। जो पहले उपहास करता है और फिर फजीहत पाता है।
INDIAN ARMY
सध्याच्या भू सेना, नौसेना, वायुसेनेच्या तज्ज्ञ लष्करी अधिकाऱ्यांनी केलेली मांडणी

नरवीर तानाजींची शौर्य गाथा
श्री छत्रपती शिवाजी महाराजांना आणि त्यांच्या वीर सहकाऱ्यांना समर्पित
धूर्त युद्ध तंत्राची करामत
गड आला पण नरवीर गेला
भारतीय सेना
INDIAN NAVY
सध्याच्या भूदल, हवाईदल आणि नौदलातील तज्ज्ञ लष्करी अधिकाऱ्यांनी केलेली मांडणी

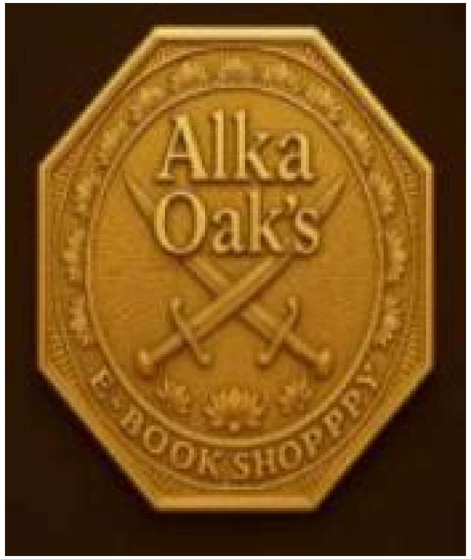

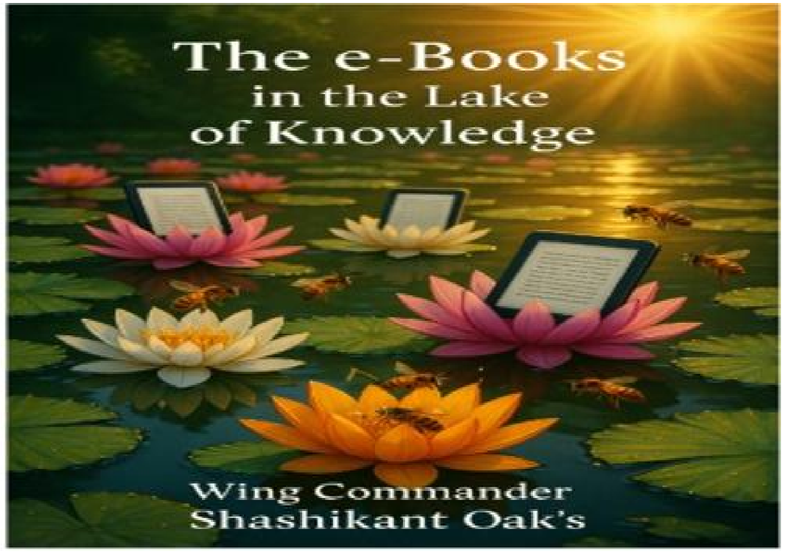

[Alka Oak's E-book shoppy 🏴, Pune - Order Online]

[alkaoak.myinstamojo.com]

https://[alkaoaksebookshoppy].in/

लढा पावनखिंडीतला
लाख मेले तरी चालतील पण लाखांचा पोशिंदा मरता कामा नये...
स्वामी कार्याला समर्पित
वीर बाजी प्रभू देशपांडे
घोडखिंड 'पावन' करणारे
वीर बाजीप्रभू देशपांडे
भाग १
₹ ५०
भारतीय सेना
INDIAN NAVY
सध्याच्या भूसेना, वायुसेना,
नौसेना तज्ज्ञ लष्करी
सादरीकरण -
विंग कमांडर
शशिकांत ओक.
(९८८१९०१०४९)

लाल महलपर
शिवाजी महाराज की
सर्जिकल स्ट्राईक
लाल
महाल

पुरंदरचा तह
भाग 1
पुरंदरचा तह- हार की माघार? | Shivpratap Garu...
Watch later

उंबरखिंडीतील नाट्य
करतलबखानाचा उतरला नक्षा -
अंबे नळीतील शरणागती - भाग 1.
भीषण कुरवंडे घाटातून
कसेबसे मुगल सैन्य
उतरले
ड्युक्स नोज
म्हणून प्रसिद्ध
बाकदार टोक

नरवीर तानाजींची शौर्य गाथा

श्री छत्रपती शिवाजी महाराजांना आणि त्यांच्या वीर सहकाऱ्यांना समर्पित

गड आला पण नरवीर गेला

सध्याच्या भूदल, हवाईदल आणि नौदलातील तज्ज्ञ लष्करी अधिकाऱ्यांनी केलेली मांडणी